श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ७

दिसम्बर २०23

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. तीर्थंकर परमात्मा के दर्शन करने के लिये..... आहारक शरीर बनाते हैं ।
२. कोई भी जीव मरकर के परभव में ..... होता नहीं है ।
३. सार्थवाह का व्यापार ..... होने से वर्जनीय है ।
४. आत्मा को कोई भी कर्म भोगने के लिये किसी एक..... का आश्रय लेना पडता है ।
५. अति निर्मल स्फटिक की भांति..... किसी को दिखता है किसी को नहीं दिखता ।
६. ..... के समुह (संघ) शातिनाथ भगवान को प्रणाम करते है ।
७. चक्रवर्ती..... वाला बाण मागध द्वीप पर छोडते हैं ।
८. बहुत आरंभी जीवों के साथ व्यापार करना..... कर्म है ।
९. अकंपित गणधर की माता ..... नामक ब्राह्मणी थी ।
१०. व्यापार में रुकावट न आये इसलिये ..... में बहुत विचार करना चाहिये ।
११. घास समुह की तरह औदारिक पुद्गलों के जत्थे का संग्रह करने वाला कर्म .....है ।
१२. धार्मिक संस्था,..... शब्द का अेक ही अर्थ है ।
१३. बंदुक, तमंचा वगैरह बनाना, उन्हें बेचने का धंधा ..... है ।
१४. वैताढ्य के उत्तर की ओर के मेखला पर ..... आदिशहर है ।
१५. मिथ्यात्व मोहनीय के पुद्गल जब शुद्ध हो तब..... कहलाता है ।
१६. मस्तक यह शरीर का ..... कहलाता है ।
१७. ऋणधारक ने अपना ऋण चुकाने के लिये लेनदार के यहाँ ..... बनकर भी ऋणमोचन कर देना चाहिये ।
१८. अकंपित गणधर ने उम्र के ५७ वें वर्ष में ..... चढकर केवल ज्ञान प्राप्त किया ।
१९. तीर्थंकर गणधर..... शरीर धारण करते हैं ।
२०. चार गतिमय इस संसार में अनेक बार इस जीव ने..... किया है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. जंबुवृक्ष किस क्षेत्र में है ?
२. जिस व्यापार से धर्म रक्षा होती नहीं ऐसा व्यापार किसे नहीं करना चाहिये ।
३. अकंपित ब्राह्मण किस कला मे निपुण बने ?
४. राग द्वेष भय और मोह से वर्जित महामुनि कौन हैं ?
५. पर्वत के उपर होते हुए भी किसकी गिनती भूमिकूट में होती है ?
६. किस गति मे कौन से स्थान में जाना यह कौन निश्चित करता है ?
७. दास दासी गुलाम आदि का क्रय-विक्रय क्या कहलाता है ?
८. जावड शाह के उपर किसका कर्ज रहा हुआ था ?
९. अनेक विद्यायें धारण करने वाले मनुष्य क्या कहलाते हैं ?
१०. इन्द्रिय पर्याप्ति नामकर्म की सहायता से क्या प्राप्त होता है ?
११. धोबी का धंधा किस कर्म में आता है ?
१२. किसके परिणाम हम क्षण क्षण अनुभव करते हैं ?
१३. कैसे श्रावक के लिये कर्मादान आचरण योग्य नहीं है ?
१४. शांतिनाथ भगवान के पास आये हुए देवता और असुर किससे मुक्त थे ?
१५. परलोक में कौन शाश्वत रहते नहीं है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. हारयाण) कणगरह ३) अहंपि ४) सट्ठी ५) सम्म ६) कर्पणे ७) विज्जाहर ८) उयरंग ९) साडी १०) पयाहिण ११) आयर
१२. इग १३) उरला १४) तणु १५) सोणि १६) परुविअ १७) तिरीड १८) इय १०) शीर्यते २०) सेवायां

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) रस वाणिज्य	१) शाश्वत धाम	६) निर्वाण पद	६) उदिरणा
२) सहायकारक	२) भावडशाह	७) परिणाम	७) अनुभवी
३) प्रकृति	३) वैक्रिय शरीर	८) ऋणानुबंध	८) महामुनि
४) भद्रशाल	४) वेशण	९) वायुकाय	९) कार्मण शरीर
५) मोह रहित	५) मणि-मेखला	१०) कटि प्रदेश	१०) मेरु पर्वत

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. भरत क्षेत्र में चक्रवर्ती कितने तीर्थ में स्वयं की आज्ञा स्थापित करते है ?
२. वीर प्रभु के आठवें गणध्र जब केवली बने तब उनकी उम्र क्या थी ?
३. कर्मादान के कुल अतिचार कितने ?
४. उत्तर कुरुक्षेत्र में कितने भूमिकूट हैं ?
५. आठ कर्म की कितनी प्रकृति उदय और उदीरणा में होती है ?
६. भावडशा के दूसरे पुत्र का कितना ऋण बाकी था ?
७. महाहिंसामय कर्म कितने ?
८. तीन शरीर के कुल बंधन कितने ?
९. व्यापार की सफलता के लिये कितनी बातें ध्यान में रखनी चाहिये ?
१०. चौतीस विजय के वैताढ्य पर श्रेणियां कितनी ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. द्विपद, चतुष्पद का व्यापार निर्ल्लांछन कर्म में आता है ।
२. तिलक तथा कंकण से सुशोभित पृथ्वी पर विचरने वाली हैं ।
३. अपने पास व्यापार में रोकने के लिये पूंजी का बल कितना है इसका विचार कर कदम भरना ।
४. नारकी जीव मर कर दूसरे भव मे मनुष्य या तिर्यंच होते हैं ।
५. तीसरे खंड को जीतकर ऋषभकूट को अपने रथ की नोक से तीन बार स्पर्श करते हैं ।
६. देवगति में ले जाने वाला कर्म वह देव-आयुष्य नामकर्म है ।
७. लेनदार को कर्ज चुका न दे तो भवांतर में बहन, भांजा गाय भैस आदि बनकर कर्ज चुकाना पडेगा ।
८. विद्युतप्रभ और माल्यवंत गजदंत के नौ कूटों में हरिकूट और हरिसह कूट का समावेश है ।
९. पीठ अंग है तो मणका इत्यादि उपांग है ।
१०. अकंपित ब्राह्मण ने वीर प्रभु के पास से त्रिपदी पाकर चौदपूर्व की रचना की ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. कोई भी जीव मरकर परभव में नारकी होता नहीं है कारण की परलोक में नरक के विषय में नारकी जीव नहीं है ।
२. कदाचित किसी म्लेच्छ के पास लेना रह जाय तो भी वह धर्म खाते डाल देना ।
३. मोक्ष रुपी संपति का दान प्रदान करने में जो शरीर उदार होता है वह औदारिक शरीर कहलाता है ।
४. उत्तम कंचण रयण परुविय भासुर भूषण भासूरि अंगा ।
५. मैं आपके क्षेत्र में रहने वाला देव हूं ।
६. मैं चौमासे में नया मकान बनाऊंगा भी नहीं और बेचूंगा भी नहीं ।
७. एक एक गति में ले जाने वाला एक निश्चित कर्म होता है ।
८. श्रावक जीवन सबंधित अनेक धार्मिक ग्रंथो में मार्ग दर्शन देखने को मिलता है ।
९. इन नगरों के आजु बाजु अनेक छोटे गांव भी होते है ।
१०. आरंभ के बिना सुख से निर्वाह न हो तो अल्प आरंभ से काम चलाये ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. रस वाणिज्य २) व्यापार में क्षेत्र शुद्धि ३) विद्याधर मनुष्यों की श्रेणियां ४) आहारक शरीर नामकर्म
५. अकंपित गणधर की शंका और समाधान

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com